

महानता का ब्लूप्रिंट: निकृष्टता से उबरने का विज्ञान

जीवन साधना के स्वर्णिम सूत्र — मानव चेतना के कायाकल्प की प्रयोगशाला

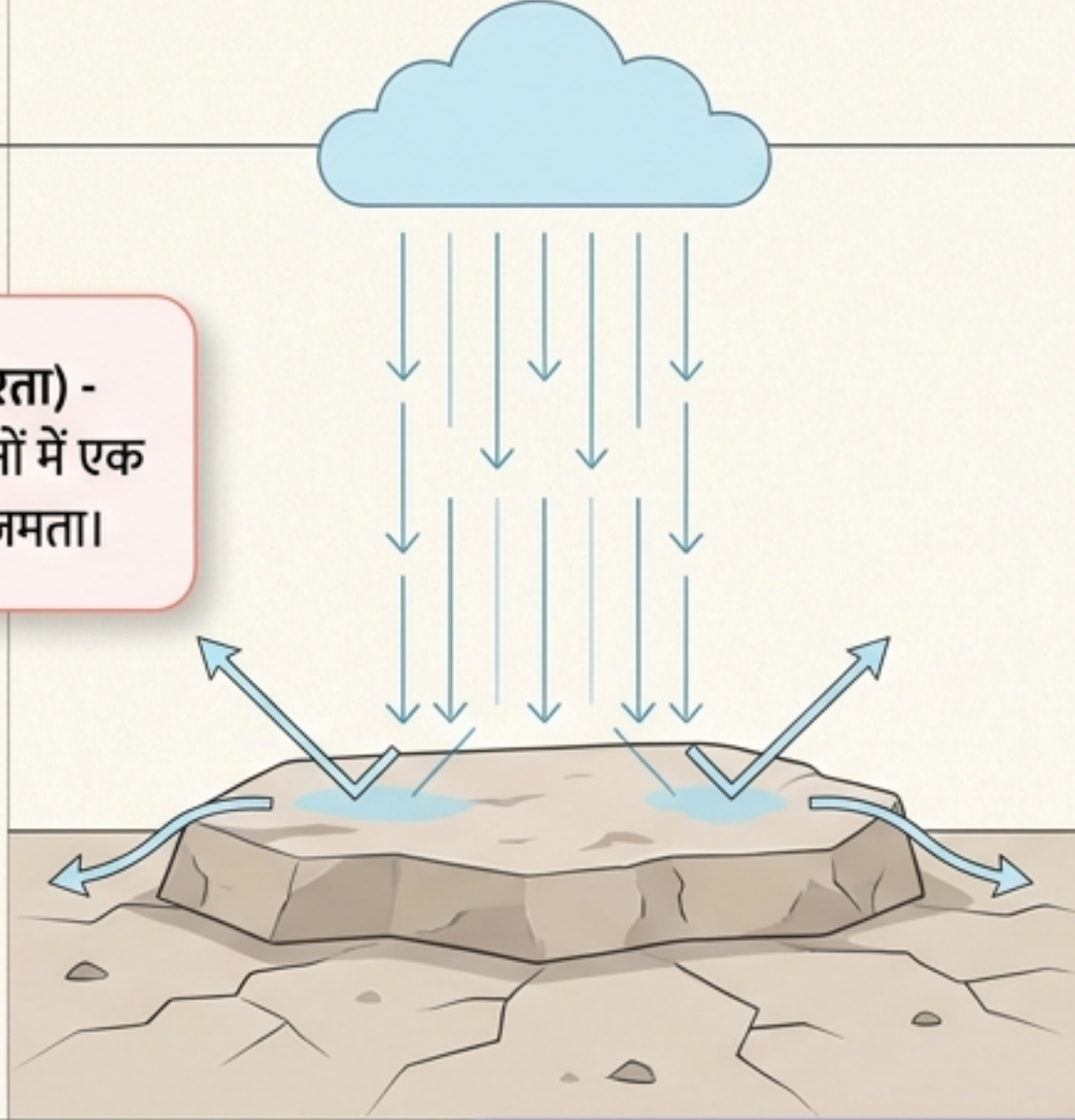


वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा- सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

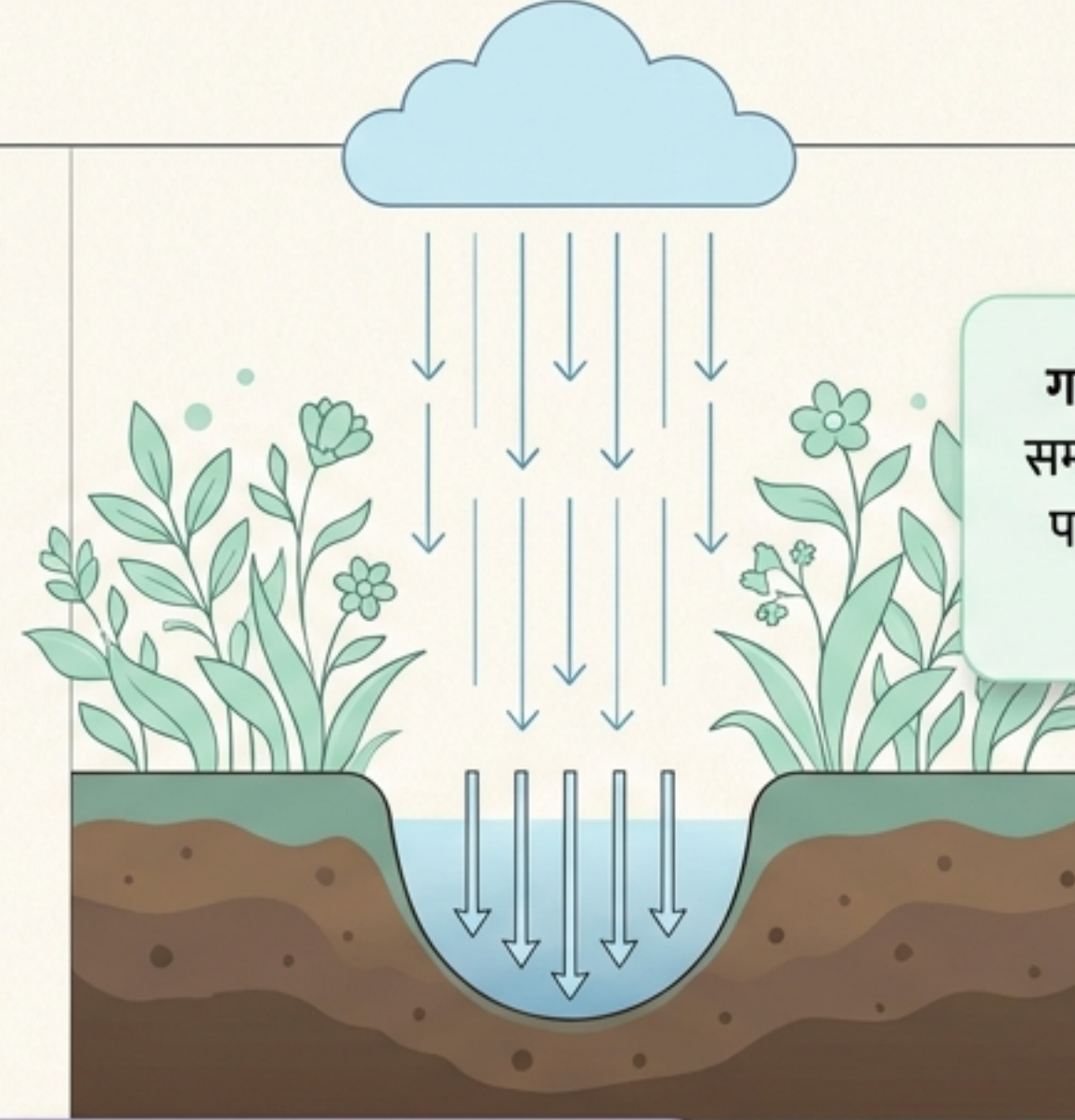
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

पात्रता का विज्ञान: ग्रहणशीलता का भौतिक नियम

उथलापन (अनुर्वरता) -
चट्टानों और रेगिस्तानों में एक
तिनका तक नहीं जमता।



गहराई (पात्रता) - बादल
समान रूप से बरसते हैं, पर
पानी वहीं ठहरता है जहाँ
गहराई होती है।



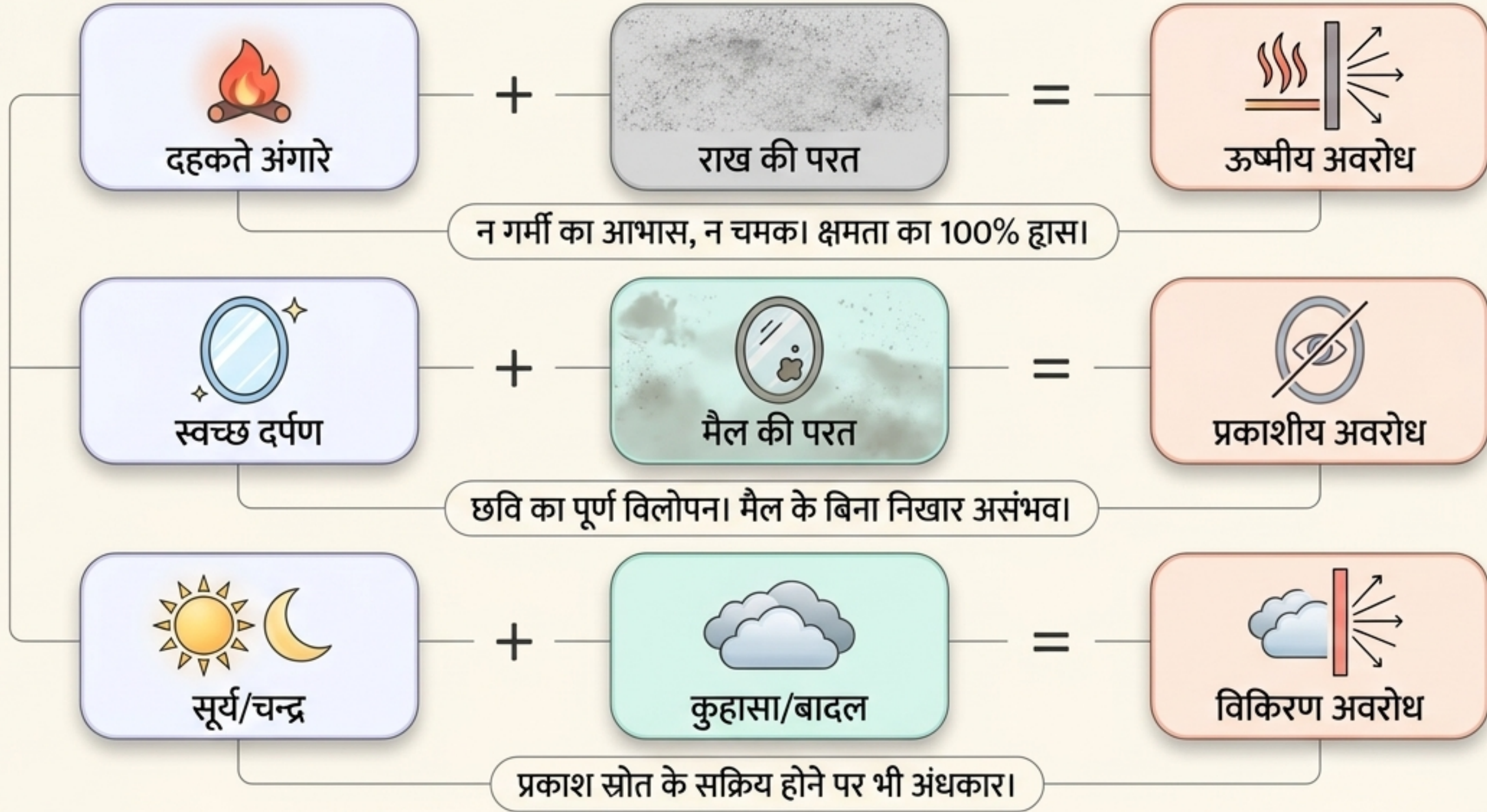
Scientific Insight

The Law of Capacity - ऊर्जा और अनुग्रह ब्रह्मांड में सर्वव्यापी हैं;
उनका संचय केवल तंत्र की ग्रहण क्षमता (**Receptivity**) पर निर्भर करता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चााप कवयेगा — सब बच्चों से कहियेगा मे कहियेगा हौ कहियेगा से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रांतिधर्मी साहित्य के जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

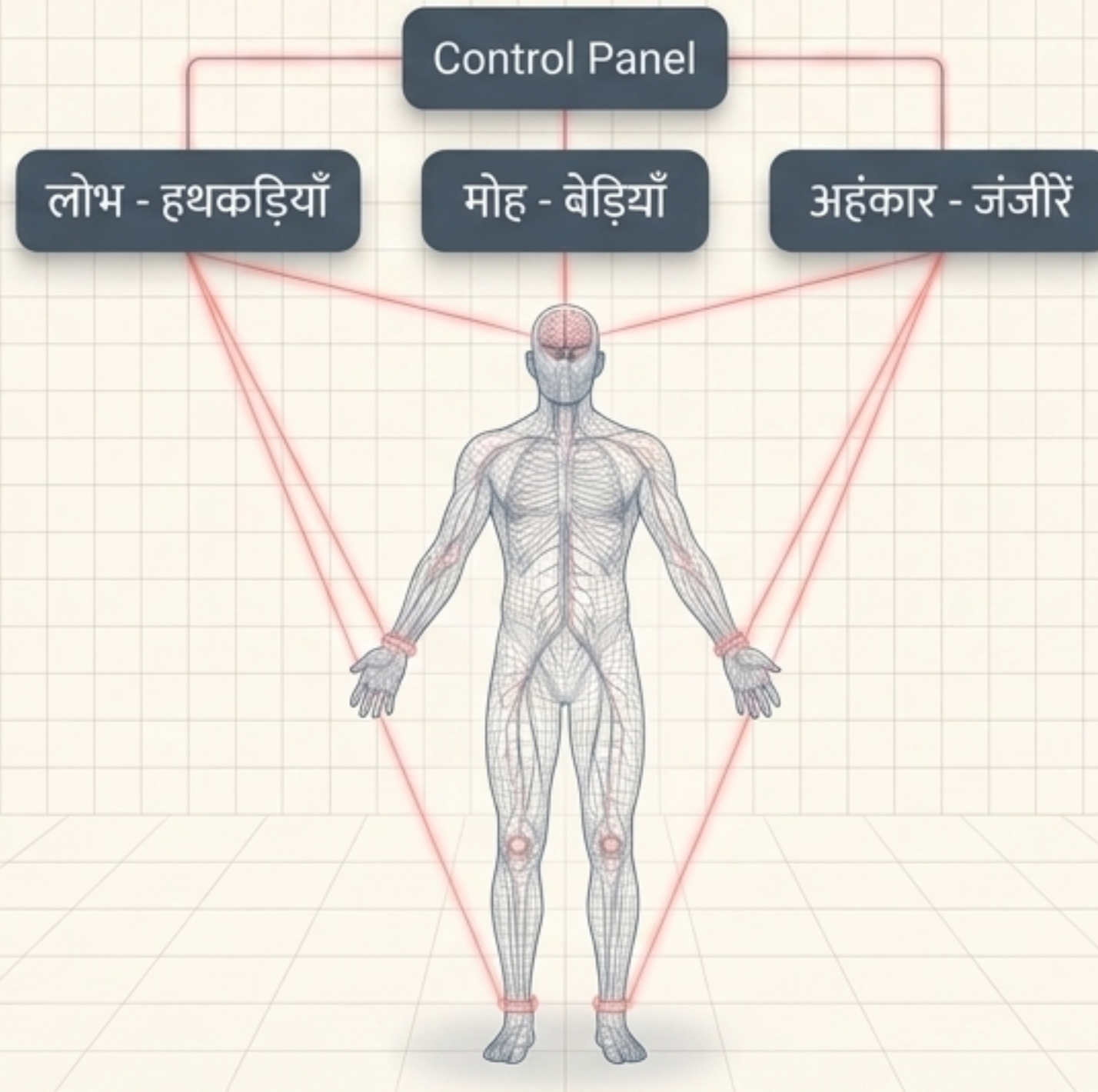
शुद्धिकरण के भौतिक और प्रकाशीय नियम



गलाई के बिना ढलाई नहीं, धुलाई के बिना रंगाई नहीं। मल-आवरण हटने पर ही आत्मा का अतुलित सौन्दर्य प्रकट होता है।

बंधन का मनोविज्ञान: कठपुतली सिंड्रोम

Neurological Hijack / Learned Helplessness



कुसंस्कारों का दुहरा दबाव मौलिक पराक्रम को नष्ट कर देता है। मनुष्य बंधुआ मजदूर और कठपुतली बनकर रह जाता है, जिसे दुष्प्रवृत्तियों का मदारी नचाता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

त्रिशंकु अवस्था: संज्ञानात्मक असंगति



अंतरात्मा की पुकार -
ऊँचा उठने की प्रेरणा

Upward Force = Downward Force
→ Net Movement = Zero (Limbo).

मनुष्य
(अधर में लटकता)

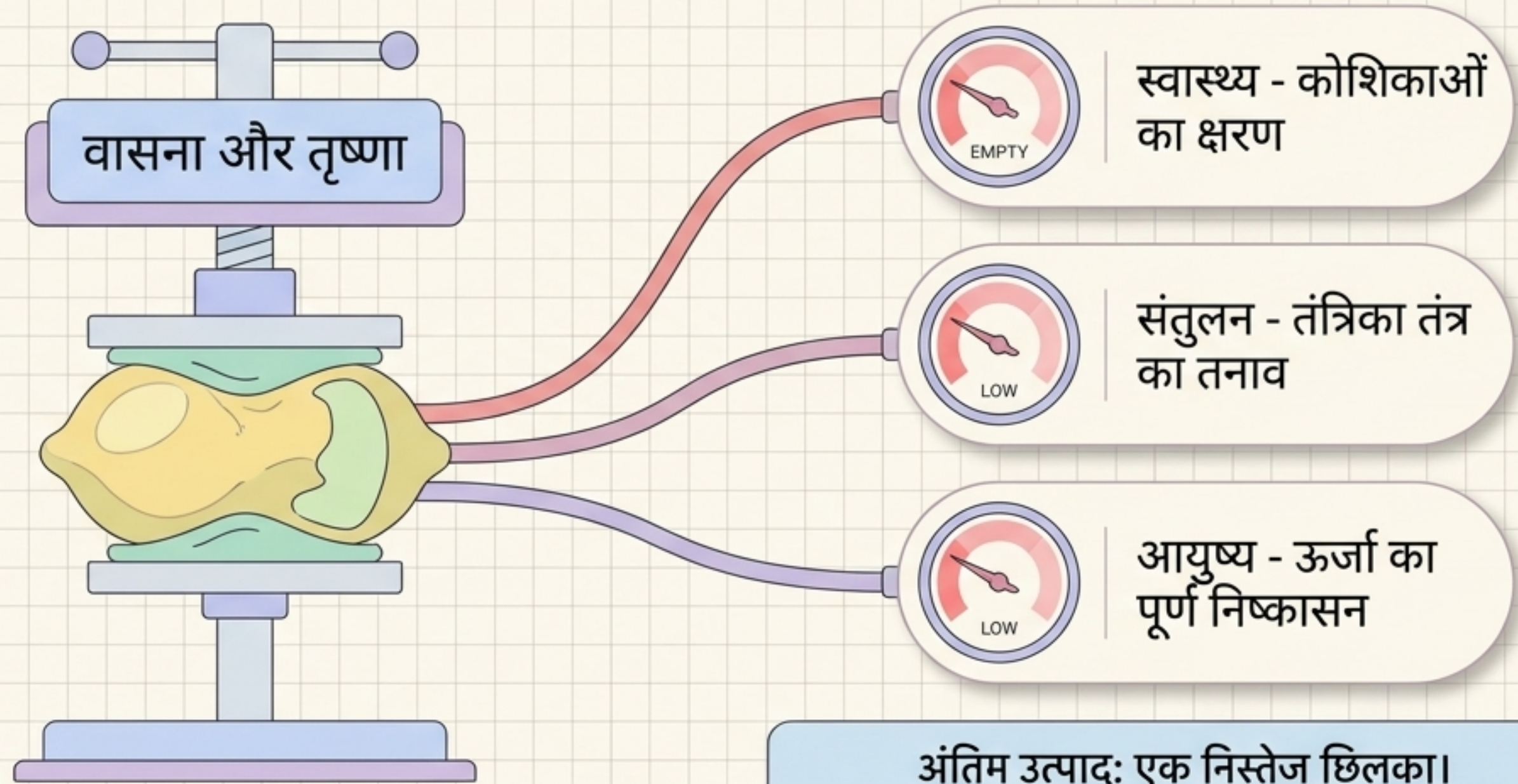
दुष्प्रवृत्तियों का गुरुत्वाकर्षण
- नीचे गिरने की विवशता

जब आदर्शवाद ऊपर खींचता है और वासनाएँ नीचे धकेलती हैं, तो मनुष्य 'त्रिशंकु' की तरह अधर में लटक जाता है। यह असमंजस मानसिक ऊर्जा को पूरी तरह सोख लेता है।

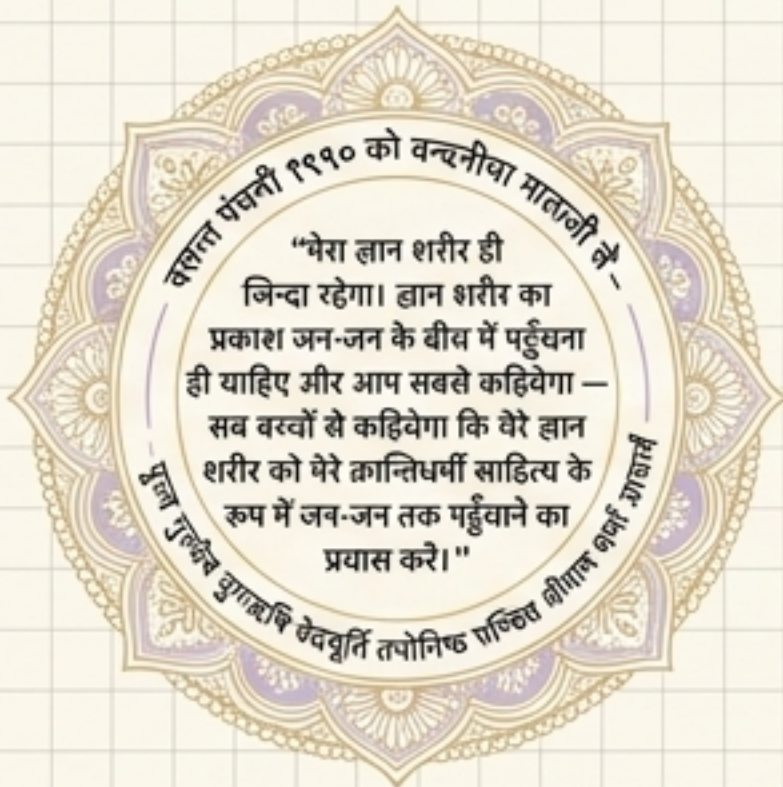
Cure Protocol:
दोष-दुर्गुणों की भारी चट्टानों को बलपूर्वक गिराना ही इस जड़ता को तोड़ने का एकमात्र भौतिक उपाय है।

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वासना: एक परजीवी जीवविज्ञान



अंतिम उत्पाद: एक निस्तेज छिलका।
वासनाएँ आदमी को नीबू की तरह निचोड़ लेती हैं
और उसे छिलके जैसा निस्तेज बनाकर रख देती हैं।



'अहंकार ट्रैप' का ऐतिहासिक डेटा

	Profile	Ambition & Resources	Net Yield
1	रावण / हिरण्यकश्यपु	असीमित स्वार्थ + समूचा पौरुष दाँव पर	शून्य / धूल
2	सिकन्दर	विश्व विजय + विशाल सेना एवं संपदा	खाली हाथ विदाई

रावण और सिकंदर के राजमुकुट धूल चाट रहे हैं, वास्तविक अमरता केवल 'ज्ञान शरीर' में है।

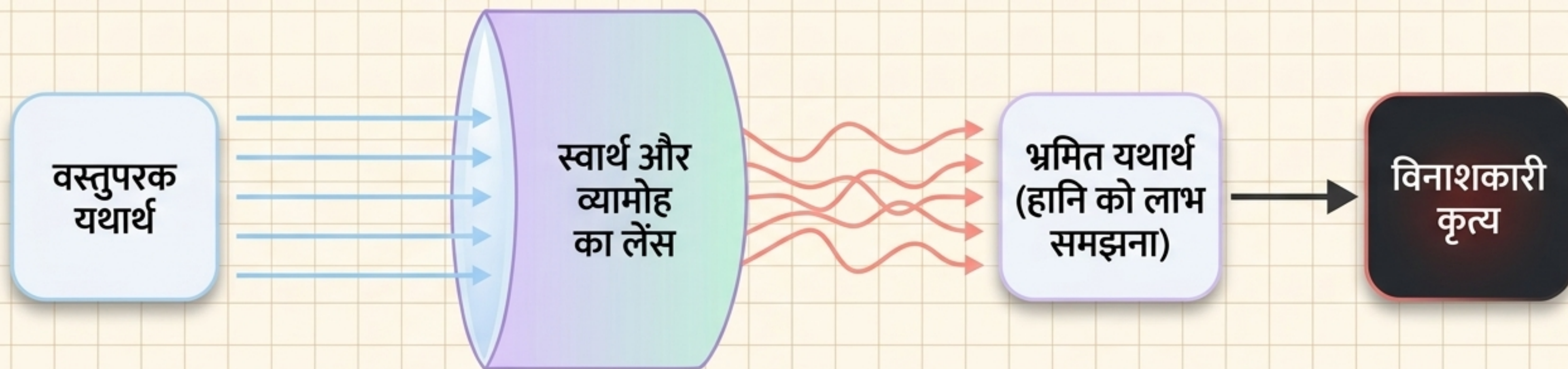
— वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’ — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

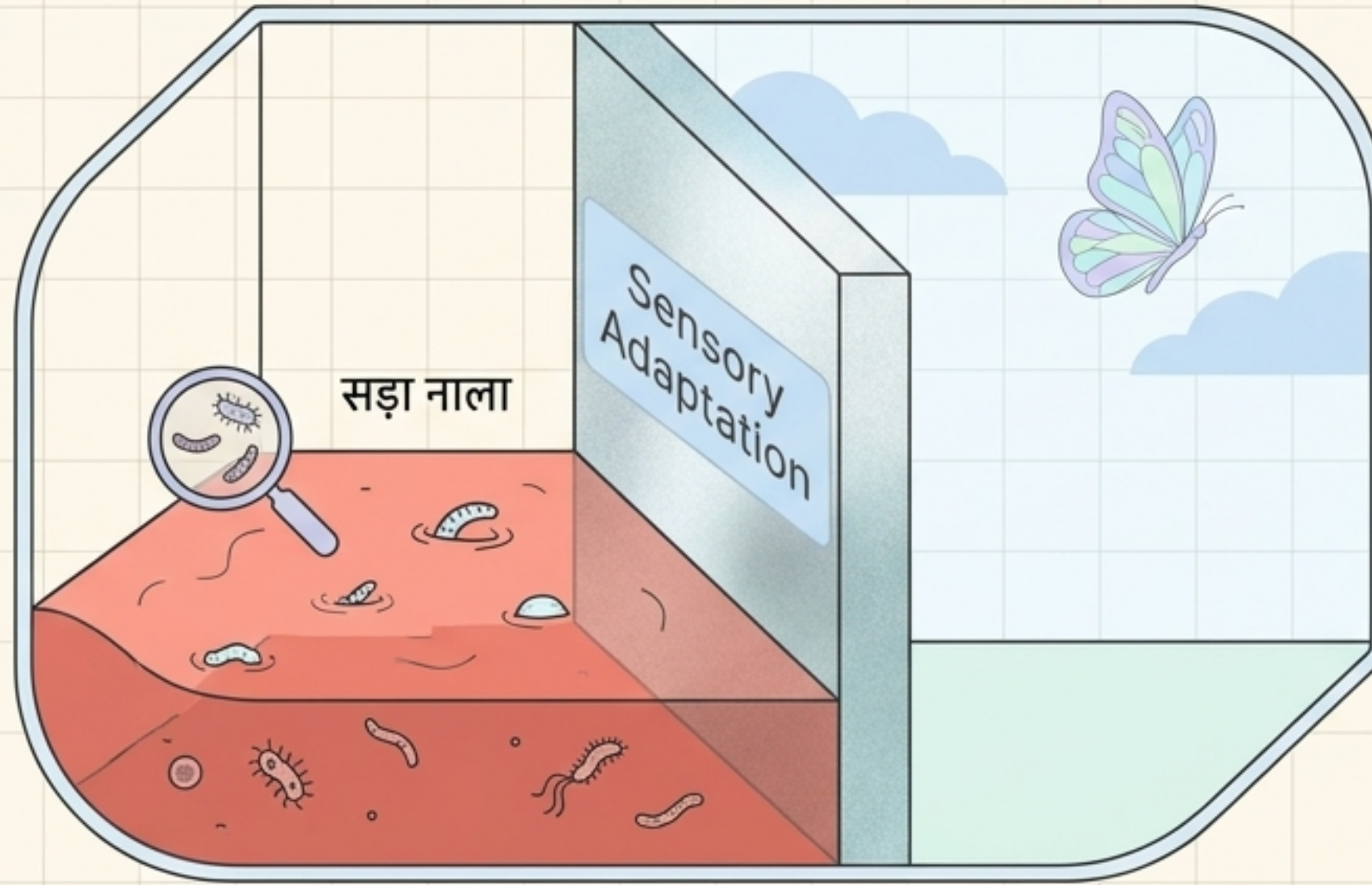
व्यामोह का स्नायुविज्ञान: ‘दुर्योधन प्रभाव’



स्वार्थ सिद्धि की ललक मनुष्य के मस्तिष्क में जादुई राजमहल जैसी भ्रांति पैदा करती है।

जो नहीं करना चाहिए, उसका निरंतर चुनाव ही मानसिक पतन का सबसे बड़ा लक्षण है।

पतन का सामान्यीकरण: अज्ञानता का पर्यावरण



सड़े नालों में पलने वाले कीड़े अपनी दयनीयता का अनुभव तक नहीं कर पाते।

औसत आदमी इसी निकृष्टता में अभ्यस्त हो जाता है। जब तक कीड़े को तितली बनने की आकांक्षा नहीं होती, उत्कर्ष असंभव है।

आदतें इतनी सघन हो जाती हैं कि मनुष्य 'नर-कीटक' बने रहने में ही सुरक्षा महसूस करता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

कायाकल्प की अनिवार्यता: विकासवादी छलांग



लार्वा / नर-कीटक

वासना और पतन में अंधाधुंध
लिप्त।



प्यूपा / नर-पशु

स्वार्थ और बंधनों में कैद,
त्रिशंकु अवस्था।



तितली / नर-नारायण

ऋषियों का वंशधर, स्वतंत्र,
प्रकाश की ओर उड़ान।

Key Action

भ्रष्ट चिंतन और दुष्ट आचरण से स्पष्ट इंकार करना ही इस कायाकल्प की पहली शर्त है।

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

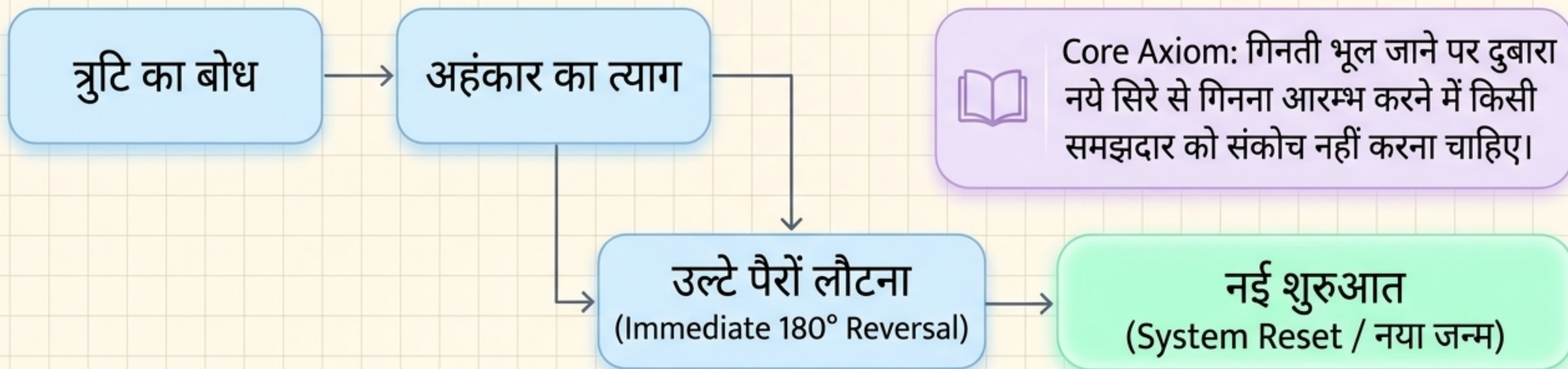
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा
रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही
चाहिए और आप सबसे
कहियेगा — सब बच्चों से
कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर
को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के
रूप में जन-जन तक पहुँचाने
का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव

युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

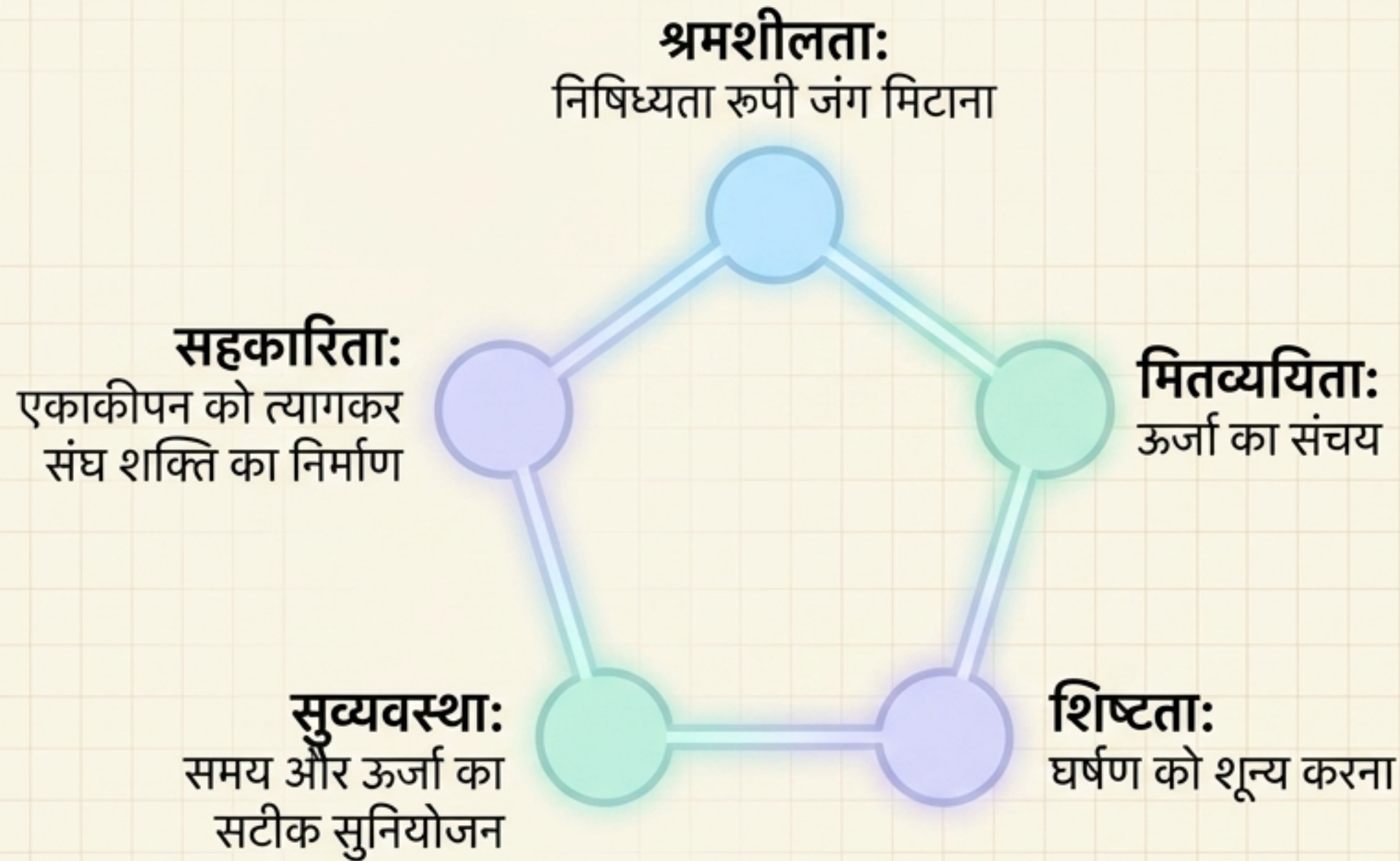
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिर्ये साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रत्यावर्तन का मार्ग: रिकैल्कुलेशन एल्गोरीदम



Result: पशु से देवता बनने की यह ‘उदात्तीकरण’ प्रक्रिया ही सच्चा द्विजत्व (Second Birth) है।

कायाकल्प के व्यावहारिक उत्प्रेरक: पंचशील



इन पाँच शीलों का अभ्यास ही आधुनिक युग की सबसे बड़ी तप-साधना है।

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें। ”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

चेतना का 'ऑपरेटिंग सिस्टम': चार आध्यात्मिक सम्पदाएं



व्यवहार के 5 शील + चिंतन के 4 सूत्र = 9 रत्नों का हार

System License

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा. ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे कानिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

(गायत्री परिवार के संस्थापक)

निष्कर्ष एवं युग-आह्वान: महानता की ओर प्रस्थान

